

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाविहार

DH 292

च.स
९

ॐ नमः श्रीचक्रसम्भवाय ॥ समन्वाहनरुमांवृद्धाभ्र (धषादिकुसंस्थिता ॥ श्रीमन्नावजगकायशक्ति
नीचक्रवर्त्तिन ॥ पंचहानंदिकायायदानायरुगमानमः ॥ आवकावजगकिंन्यस्थितिसंकल्पबंध
ना ॥ लाकाकल्पप्रवर्त्तिन्य स्वावनीस्थानमः सदा ॥ ॐ स्वरावगुडासर्वधर्मा स्वरावगुडाहं भुज्य
मांहानवजस्वरावात्मकाहं ॥ अटिभुज्यमाननकचं ॥ ह्रंवजक्रामं श्रीरुगवक्तं कुरुमापिधसनसं
स्थितं ॥ महारुवव कालिजात्यानमोलिनं दिव्यादिलिङ्गिभुज्याख्यां वज्रवज्रघटधनं भूपरीरु

गु
१३

क्रात्यांगक्रचर्मावयधनं ॥ रुद्रियभुज्यां उमपूरवदांग चरुर्भुज्यां पयभूपास पंचमभुज्यां कि
र्त्तिकपाल घटमभुज्यां द्विभूयव्रभसिजसिनि ॥ द्वादशभुजं चरुर्भुजं मिनि दिनं कुरामकूट
धपिधं कपालमालालंकरं भिजसि अर्द्धवदधपिधं विष्ववजाक्रान्तिमोलिनं विक्रमाननं दश
दूकरशीषधं ॥ गंगजदिविरुत्सजा हासपदहयानकं कपूरधरुगभनन वनारुचवभचि
नं ॥ व्याघ्रचर्मनिवभनं ॥ अर्द्धनयमिजमाला सदाहं धपिध कटिकानचकीकूलमिजाम

च.स

३

ॐ सप्रतिष्ठितवज्रहं॥ मधुलाधिपति॥ ॐ आहं॥ वलिअधिपति॥ ॐ हूं हूं हूं मनुकशटकमुन्यं विहाय
अकायधकपालमध्यमं कानक्षमामकिष्कम्॥ अष्टादशभुजामकं मुखारवप्रवानांकूससव्यकपालक
लिमसव्यकपालकूलिसध्वज॥ नथगगनरथधध्वनवमनुवलप्रदा॥ हंकाधनूपाभीचखद्वागिस
कलमधुल॥ भूतमंगलविनासचगक्षयिनिशालुनकवनवयोवनसंपन्नादिनडाभुलसूदनी॥ ॐ वा
नूतिदेवीरुहाजकायहस्माधनमः॥ ॐ वानूतिदेवीयनमस्वाहा॥ ॐ पूर्णगिनिदेवीयनमः॥ ॐ हं मा

गुरुः
३५

लदेवीयनमःस्वाहा॥ ॐ जगंधनीदेवीयनमःस्वाहा॥ ॐ रवगाननादेवीयनमःस्वाहा॥ ॐ वज्रगंधस्वा
हा॥ ॐ वज्रसिंघनरुषधस्वाहा॥ ॐ वज्रपृथ्वस्वाहा॥ स्वाहा॥ नीलनीलं चनीलालाभुजाखासीग
संगमी॥ रुकपाहं चामहं वायु अक्रोयातवमामकी॥ ॐ हहाकीं भूर्वस्वाहा॥ हकायहनमवधहा
कायगंधनाभनं॥ कीं कायवीर्यहनाचअमृताकायनुत्पवयन्॥ ॐ सर्वरुद्रकामिनिसर्वरुद्र
अधनिगूष्कवजीनिकाधग्वनीसर्वद्रव्यव्यापिनि॥ अधयहं॥ ॐ अमृमअमृमंप्रवभयहंस्वा

स. मा
४

हा ॥ पूं जां ओं आं एं वां दें मां कां ओं हिं कां कं नं कां कीं पें गुं (भं सिं मे वं ॥ पी (भ प पी ० ॥ ओं ऊं का प ऊं
ऊं ऊं दा प ऊं द भ ला प का भ ला प क भ भ ना प भ भ न ॥ ओं स्थानं मन ऊं हं ॥ ओं याग भिन ऊं हं
ओं आत्मानं मन ऊं हं ॥ ओं न ऊं २ सर्व नि हं ॥ न ना स्व हृ द या २ का न ऊं न च द म ह्य ला प नि क्त ऊं हं का
न न का ॥ ओं का न मु क्त ऊं हं हृ द का नां नं भू लिक लि प की द्र य क्त ऊं व र्ध मू चार्य व ऊं प प्र च क्वा क वि
मु छिं च वूर्या ह् ॥ नृ प क्त ध्व व जा च न वे द ना क्त ध्व व ऊं सूर्य सं हान क्त ध्व प प्र न न् स्व नः स्का ने क्त

गुं
३६

ध्व व ऊं ना ऊं वि हान क्त ध्व व ऊं स त्व सर्व न् थ ग न श्री ह नू क व ऊं च क्वा मा ह्व ऊं ४ (भ न य ४
द ष व ऊं प्रा ष य ० ० ध्या व ऊं व ऊं ना ग व ऊं ४ सं स्पर्श मा न ना य व ऊं सर्वा य न् नै पू र्ण स्व र्य व ऊं
॥ ए थी धा नु पा न नि भ्रा प धा नु मा न ति ॥ न ऊं धा नु ना क र्ध नि वा यू धा नु प प्र न न् स्व पी आ
का भ धा नु प प्र क्वा लि नीः ॥ न वं क्त ध्व ध्वा त्वा य न न् पृ द व ना वि मु छि ॥ हृ दि स्मि न् हं का न स्व
र्य हान स त्व मा क्त ष्य ॥ ओं हृ २ ऊं श्री ह नू क र्ण हान क स्य प्र व न स त्का ना य पा घा च म नी र्घ प

॥स.धि॥
॥५॥

मिच्छस्वाहा ॥ ॥ ऊहेंवेंहें ॥ पूष्यन्याम ॥ श्रीवज्रहहवृक्षहेंहेंहेंहें ॥ ओं कीं हहहेंहेंहेंहें ॥ ओं वज्रव
वाचनीयहेंहेंहेंहें ॥ ओं सर्ववृक्षगकिनीयवज्रवर्धनीयहेंहेंहेंहें ॥ ओं गकिनीयहेंहेंहेंहें ॥ ॥
ओं नामायहेंहेंहेंहें ॥ ओं स्वद्युताहेंहेंहेंहें ॥ ओं नृपिनीयहेंहेंहेंहें ॥ ओं वज्रकपाटकहेंहेंहेंहें
ओं समयकपाटकहेंहेंहेंहें ॥ ओं विस्मयकपाटकहेंहेंहेंहें ॥ ओं स्मविस्मयकपाटकहेंहेंहेंहें ॥
ओं कपश्चन्दहेंहेंहेंहें ॥ ओं कूरश्चक्षुःक्रियहेंहेंहेंहें ॥ ओं वधश्चरामनीयहेंहेंहेंहें ॥ ओं श

गु
३

भयश्च महानाभयहेंहेंहेंहें ॥ ओं कारुण्यश्च विमलमियहेंहेंहेंहें ॥ ओं कीं सर्वनीयहेंहेंहेंहें ॥
ओं कीं शलकेश्वरीयहेंहेंहेंहें ॥ ओं हश्चर्मकायहेंहेंहेंहें ॥ ओं हश्च नवावनीयहेंहेंहेंहें ॥ ओं दह
श्च महार्कनवियहेंहेंहेंहें ॥ ओं पञ्चश्वायुवर्गहेंहेंहेंहें ॥ ओं रुद्रश्च वसुधिवानुमालावर्णीविने
श्च सुवार्णक्रियहेंहेंहेंहें ॥ ओं गङ्गाश्च सफुपातालकुङ्गसफुवार्कयश्च मादवीयहेंहेंहेंहें
॥ ओं कार्कश्च सहस्रहेंहेंहेंहें ॥ ओं कीं ह्यकर्महेंहेंहेंहें ॥ ओं ह्रीं श्वगाननहेंहेंहेंहें ॥ ओं

॥स.धी॥

॥६॥

ॐ२ चक्रवर्गहं हं हं हं ॥ ॐ हां हां ख (ध) ना हाय हं हं हं हं ॥ ॐ कौं२ श्रीहिनीय हं हं हं हं ॥ ॐ हं हं चक्रवर्मिनी
य हं हं हं हं ॥ ॐ किलि२ स्मविन हं हं हं हं ॥ ॐ मिलि२ महावल हं हं हं हं ॥ ॐ विलि२ चक्रवर्त्तिन हं हं हं हं
ॐ धिवि२ महाव (ग) हं हं हं हं ॥ ॐ काका (ध) हं हं हं हं ॥ ॐ उवृका (ध) हं हं हं हं ॥ ॐ स्वाना (ध) हं हं हं हं
ॐ सकला (ध) हं हं हं हं ॥ ॐ यमजदिय हं हं हं हं ॥ ॐ यमइ कीनिय हं हं हं हं ॥ ॐ यमइ सीनीय हं
हं हं ॥ ॐ यममर्थनीय हं हं हं हं ॥ चक्राय हाय हं हं हं हं ॥ ॐ गकलाय हं हं हं हं ॥ ॐ कालाकलाय

॥गुरु॥

॥३५॥

हं हं हं हं ॥ ॐ कलंकलेनवाय हं हं हं हं ॥ ॐ भूट्टहासाय हं हं हं हं ॥ ॐ लक्ष्मीवर्धहृतासनाय हं हं हं हं
॥ ॐ धाजांधकानाय हं हं हं हं ॥ ॐ किलीकिलालवाय हं हं हं हं ॥ ॥पंचापचाय पूजा॥ ला (ध) घस
वादत (ध) ॥ सुनि ॥ ॐ पनमसूखासयसूबलितविलासनमिहं : नमामिहगवकं ऊहं वीहा ४ हि
हिहिप्रदिक्कू सुमां कलिनाथहा ॥ सुनि ॥ सर्वहृहानसन्दाहकगदर्थप्रसाधक ॥ चिन्ताम
सिनिवारुनं धीचक्रसम्बनमा सुन ॥ अदिमिमुन्यमानकनं यं नं लं वं हं संहं कागनिर्जा मं वि

॥ सन्धि ॥

॥ ७ ॥

भवजावनरकं कंकायापविकूटांगानंच न स्वच दुद्धानंच न दुष्मानधमिह न हानाई हान सं (॥
हं किं किं नीजालमधिगं ॥ रविचक्रवर्जुनलं दुद्धाननिर्जह संधिषू ॥ कूम्हसूम्ह महावज्र कर्मभि
र्षन्तु यजुः शिष्येष्ट पनाका स (॥ हं चामलादिविरूपिणं ॥ न इयवियं कानं पविनं विष्पपत्र
मष्टदलकर्षिका कभनाचिनी ॥ न इयविभ्राणा धमधुलस्य श्री हृक् स माधुलयं विलाय
॥ नत्सर्वं हानसत्त्वादिहितं मिष्यगगधमायूर्ययाचदिविप्रासहिने च्छुध्रुपनाका व

॥ गुरुः ॥

॥ ३५ ॥

स्तुवादि नगीमन्त न्यूपूष्य वं कूमादिहि ४ कनकिसलयावर्जिनावाधिचिह्नमृत्पूष्यकिल (॥ मः मि
ष्यपद्मानि ॥ न्यूपूष्यमहिषिचिमाननूपवजादिहि नूपनियमानं मंगलंगीमीहि ॥ अहिषकं महा
वज्रं देधाहुकं नमस्सुमं ॥ ददामि सर्ववृद्धानां हि गृथालयसेहव ॥ ॐ दं सर्ववृद्धानां हि धनुक
नमस्सुमं ॥ यूपूष्याकं पूजनाथयिमकूटपंचकूयाहव ॥ ॐ सर्ववृद्धचूगमहिमहामकूटप्रतिच्छ
स्वाहा ॥ ॐ वज्रधाम न्यूपविभूहिषिचहं ॥ ॐ सत्त्ववजीभूहिषिचहं ॥ ॐ नलवजीभूहिषिचहं

॥सवि॥
॥८॥

॥ॐ धर्मवज्रि अहिषिंचक्रौं॥ ॐ कर्मवज्री अहिषिंच भ॥ ॐ उदकमकूटवज्रयष्टनामाहिषिंचमी ॥
ॐ पंचवृद्धमकूटदवनाहृदायकायपात्राचमनार्घ्यप्रतिष्ठा स्वाहा॥ ॐ वैभाचनाय स्वाहा॥ ॐ अक्राया
य स्वाहा॥ ॐ नलसंख्याय स्वाहा॥ ॐ अमितायाय स्वाहा॥ ॐ अमायसिद्धाय स्वाहा॥ ॐ वज्रगधस्वा
हा॥ ॐ वज्रसिंघनाय स्वाहा॥ ॐ ~~वज्रसिंघनाय~~ ॥ ॐ व्यापि सृगनाधिपतिजितमहानाक्रं पंचवृद्ध
नमस्तुभ॥ ॐ रुक्मीनीलवज्रकनिलं शुभालिकं ध्वजत्वा कृपकृत्यान् समाहि नः स्तुव सं हान या ए

गु
४०

न संकृपत्संभूमं॥ कल्पयस्त्विनचिरुतवज्राचार्यमहत्सना॥ अक्रसंहावनात्यासाहसिद्धाक
कानसंभय॥ ॐ वज्रमाजानां मूलमंभुपनिश्रुपम्॥ अक्रनूकाग्रहसर्वस्वाहि अमरविभक्तुगति
असंभु अविश्रुमिर्जं ॐ नूविभक्तु॥ ॐ पद्ययं महाहान सर्ववृद्धमहर्हवम् ॥ ३६॥ अस्वाहा॥ ॐ
श्रीवज्रहृदयम्॥ ॐ ~~वज्रहृदयम्~~ ॥ ॐ वज्रवाजिहिदवनाहृदायकायपात्रार्घ्यनमः॥ ॐ अम
दायनमः स्वाहा॥ ॐ पयमानंदायनमः स्वाहा॥ ॐ विजमानंदायनमः स्वाहा॥ ॐ सहजानंदा

च.स
८

यनमः स्वाहा ॥ पंचापचानपूजा ॥ स्फुटि ॥ ॐ नमस्तुभ्यो नंदयनमः ॥ अर्धव. विनमानंद ॥ अहिर्न ॥
सहजागुश्रुतत्वाख्यं पंचक्रितस्मकं चागताधिभवंदप्रक्षमामिस्तुसर्वदा ॥ वलिसलंघ-
च्छुल्लमय ॥ ॐ भूफाजमुखसर्वधर्मा माद्यं नृत्पंनत्वा ॥ ॐ श्रीं आचमनं प्रणिच्छस्वहा ॥
ॐ यं कायधवायुमधुलंधन्याहनीलवर्धचलस्यकाककिं ॥ नृपविंकायधमभ्रिमधुलं
प्रिकाधनक्तवर्धनालाकिं नृपविंसंकायधमनूमधुलं नृपविकंकायधमिमुधकपालं

॥ गुण ॥
॥ ४५ ॥

क्रुचुविकापनिपन्नलसुं नृहक्यादिकं ॥ ॐ हूं श्रीं खेंलां मां पां नां वं कालजानदधिस्त्रिपं
चामरुपंचप्रदीपनृपनिष्पाप ॥ वायुपुनिरुप्रक्षलिनात्रिमापविलिनविजाऊनादिकमहिर्न
वरागुवर्धप्रमनृपं दृष्टा नृपानदवर्धहूं हव. भूधमृखामरुमयभुक्तपप्रणविलिहामधु
वंपायदवर्धमीकलं इका ॥ नृमस्तु इपविभालिकालिपविननारु ॥ ॐ आहंकाजाननृक्रमनाप
रूपविस्थितान् ॥ नृत्पः स्फुटि नृत्पस्मिनादभदिग्यनिवीनवीनव्वनीधमहानामरुं प्रदीपसर्क

सधि

१०

मधन्यायसिचक्रमाकृत्य॥ रुगदर्थकानयित्वा समापत्तिपूर्वकं इवीहूय यथायथं रुषुक्ति
रुषु प्रविषु सकलसागनादि। स्तुच॥ ओं कानदिकर्मपिकर्मश्च निलानमः वलाव्य॥ ओं आहं
॥ पादार्घ्यं ॥ पुष्पं न्यास ॥ पंचापचानपूजा ॥ लाव्य ॥ ओं अलिकालिपविधनचद्रसूर्यस्वराव
कनक्षया रुगमं ॥ हं कानदहृद्वा ॥ ओं अन्यन्या नूगना सर्वधर्मा अन्यं नानूगना सर्वधर्मा पयस्य
जानूगना सर्वधर्मा ॥ हं दव्यप्रमादं समयप्रमादं ॥ रुद्रकावाचचपयप्रमादं ॥ प्रहनसम्भू

गुरु
४२

नरुवनयना वक्राममानूयहं हुकुमां ॥ ओं हवभुक्तवज्रजिकान्यस्त्रिचक्रदवमाना ॥ ओं कवक
न कूनु २ बंधबंधडाभय २ ओहय २ की २ कै २ हूं हूं हूं २ दह २ पच २ रुज २ वस २ धि २ नि २ माला
वलं विन्य २ गृ २ सफपाताल गरुडुजंग रुसपंवारुर्जय २ आकध्व २ की २ हूं २ आं २ हों २ की
२ हूं २ किलि २ तिलि २ चिलि २ धिपि २ हूं ॥ ओं वजाललिहा ॥ ऊहूं वं हा ॥ वज्रजकिन्यः समयस
त्वद्वं हा ॥ पंचापचानपूजास्तुति ॥ हवसमसंगहृग्नं संकल्पहं गमः स्वमिव सकलरावंत

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार DH 292